प्रश्न → विद्यापति के विरह वर्णन की विशेषताओं का आकलन कीजिए?

उत्तर → मैथिल कोकिल विद्यापति का हिन्दी साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। काल क्रम की दृष्टि से वे आदि काल के कवि हैं। भाषा-प्रवृत्ति की दृष्टि से इनका विवेचन वीरगाथा-काल में होता है। काव्य प्रवृत्ति के संदर्भ में रीति काल के निकट प्रतीत होते हैं।

विद्यापति ने संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार दोनों का सफलतापूर्वक वर्णन किया है।

विद्यापति विरह के चितेरा मर्मज्ञ हैं। विरह प्रेम की कसौटी है। इसे पार पाने की उमंग है, उल्लास है, दर्द है, छटपटाहट है, पीड़ा है, रुदन है, बेचैनी है, छटपटाहट है, उत्पीड़न है, मूर्च्छना है और वेदना है। विद्यापति के अभिसारी के रूप में राधा चित्रित हुई है। अभिसारी साहित्य की यदि किसी एक शब्द में अभिव्यक्ति करना हो तो निःसंकोच भाव से कहा जा सकता है कि वह शब्द है राधा।

राधा मध्यकालीन साहित्य की प्रेरणा शक्ति है साधना भी है और आध्यात्म नारी की वह ऐसी अलौकिक मूर्ति है जिसके शरीर के अणु अणु में कृष्ण जिन्दगी की तरह है। और आत्मा के प्रत्येक चेतन परमाणु में कृष्ण प्रेम का अलौकिक दर्शन है।

हिन्दी साहित्य जगत में विरह वर्णन प्रायः चार रूपों में उपलब्ध है।

— 1. पूर्वानुराग 2. मान 3. प्रवास गमन 4. करुणात्मक

1. पूर्वानुराग में विरह की स्थिति उत्पन्न होती है जब प्रिय के प्रति प्रेम का जागरण, गुण, श्रवण, चित्र दर्शन या स्वप्न दर्शन के फलस्वरूप होता है। प्रिय के संयोग का।

नहीं होने के कारण स्वप्नों की आसक्ति देख-
और अलग-अलग पर-व्यथा की भी जानने लगी है।
राजा रतनसेन का पद्मावती के सौन्दर्य के प्रति
आकर्षित होना और मिलन के लिए आतुर
तथा व्याकुल होना इसकी कोटि का है।

2. मान जाता (विरह) स्थिति संयोग के बाद उत्पन्न
होती है। प्रेमी का स्वभाविक दशा में भी
किसी कारणवश मान प्रणय का विचार
आता है जिसमें नायक नायिका परस्पर
रूठ जाते हैं।

3. विरह वर्णन का तीसरा रूप वह है जिसमें
प्रिय के परदेश गमन पर प्रोषित पतिका नायिका
अपने गुणों और के साथ बिताये हुए सुख के
क्षणों आदि का चिन्तन कर विरह व्यथित होती
है। रत्नसेन के सिंहल द्वीप में चले जाने के
बाद जाने पर नागमती का विरह वर्णन
इसी प्रकार का है। सूरदास की गोपियों
का विरह भी इसी कोटि में परिभाषित
किया जा सकता है। विद्यापति की राधा का
विरह वर्णन भी प्रधानतः प्रोषितपतिका
नायिका के विरह के रूप में किया गया है।

4. विरह वर्णन का चतुर्थ रूप वह है जिसमें
प्रिय के अनिवार्य पर नायिका के हृदय में
मिलन आशा उत्पन्न होती है। इस विरह
में तड़पन आतुरता एवं करुणा की प्रचुरता
अधिक होती है कारण है कि पुनर्मिलन
की संभावना निश्चित रूप से समाप्त हो
जाती है।

विद्यापति वस्तुतः सौन्दर्य के कवि हैं।
सौन्दर्य उनका दर्शन है, सौन्दर्य उनकी
जीवन दृष्टि है ~~और~~ इस ~~सौन्दर्य दृष्टि~~ के
सौन्दर्य की उपासना कई रूपों में देखा पा
इसे कुशल शिल्प कार की तरह उन्होंने

गुण सजाती, संवार और आलोकित किया।
सौन्दर्य मन को कितना भाव विभोर और
रोमांचित कर देता है। इन्हें विद्यापति आदि
भी। विद्यापति सौन्दर्य एवं श्रृंगार प्रयोग के कवि
नहीं मानता है कि उनकी पदावली में संयोग
का [illegible] है।
अभिसार पूर्वराग, प्रथम भाग [illegible]
का [illegible] रति [illegible] आदि [illegible]
हैं। संयोग चित्रण में आनन्द पाने वाले
कवि ने [illegible] रचनाओं के वर्णन -
स्थापित संयोग को ही [illegible]
करने के लिए किया है। विद्यापति के
संयोग [illegible] श्रृंगार में सारी - सारी
रात काम [illegible] के उपरान्त [illegible]
नायिका विद्युत में विद्रोह की [illegible]
पीड़ा की अनुभव - करते हैं। उन के
[illegible] विरह [illegible] कर - कर है।
वस्तुत यह पीड़ा भी काम पीड़ा है।
विद्यापति पदावली में विरह
वर्णन [illegible] पुनरावृत्ति की [illegible]
प्रारम्भ होता है। [illegible] के प्रति परदेश
जाने वाले हैं। वह अपनी सखी से अपनी
व्यथा व्यक्त करती है
" [illegible] हे [illegible] विदेस।
हमें कुल कामिनि [illegible] अनुचित [illegible]
उपदेस।
कन्त न [illegible]
[illegible] समर, [illegible] न अनुपम [illegible] है लिखा गाह
पलि
[illegible] दिन [illegible] निवास।
हमें [illegible] ने से है यह [illegible] पर उपहासे
होएताह [illegible]
[illegible] मन साधव चिंतन, [illegible]
भागी
है सखि! [illegible] उन्हें परदेश नहीं जाने
का उपदेश दो। पति परदेश जाने का समय
नहीं है

"मैं वियोग अग्नि में जल जाऊँगी।"

यह अपनी अपनी है। डॉ॰ 3.48 स्वयं में अपने पति को समझाने लगती हो कहती है कि विरहिणी की प्रिय मिलन की यह अभिलाषा Alexander Selkirk की पंक्तियों के प्रारम्भ में

Oh! Had I the wings of a dove
How soon would I taste you again

विद्यापति में प्रेम की दुर्निवारता दिख पड़ती है। जब प्रेम की उत्कंठा इतनी बढ़ जायेगी। तो वह दुर्निवार हो जायेगा और संसार में कौन रोक सकता है —
विद्यापति कहते हैं —

प्रेम गति दुरिवार अवरनी
चकव मोरानियों के मेरा से।
कब मैं पहुँचा उदेस रौं।

विरह वर्णन के सन्दर्भ में कवि ने ऋतुवर्णन और बारहमासा वर्णन भी किया है। षड्ऋतु वर्णन मूलतः संयोग शृंगार का करता है जब कि बारहमासा विप्रलम्भ शृंगार का। विद्यापति ने विरह का वर्णन बारहमासे की पद्धति पर किया है —

मोर, पिआ सखि गेल दूर देस
जौबन दए गेल साल सँदेस।
मास असाढ़ उनत नव मेघ
पिया बिसलेस रहओं निरथेघ।।

आषाढ़ के नवीन मेघों के आने से प्रिय विरह दुःख की कामनी इतनी निर्बल बनती होती जा रही है। आषाढ़ की देर सावन की वर्षा, मोर, दादुर की पुकार, सब प्रिय के अभाव में भयावह हो जाती है — "दर-दर" की आवाज ऐसी लगती है मानो दामिनी खंड खंड चला रहा हो। विरहिणी के दुर्भाग्य विरहिणी को विशेष प्रकार प्रतीत हो रहा है —

5

आषाढ़ सावन भादौं क्वार कातिक अगहन, पूस माघ फागुन चैत बैसाख जेठ, दूरस्थ पति के वियोग में विरहिणी नागमती ने अत्यंत कौशल से विरह की वेदना को बारहमासा में अंकित किया है।

यहाँ स्मरणीय है कि बारहमासा की परम्परा हिन्दी की अपनी नहीं संस्कृत अपभ्रंश आदि में षड्ऋतु वर्णन की परम्परा थी बारहमासा की रचना निश्चय ही इन्हीं का आधार लेकर हुआ होगा।

जायसी ने विरह के इन पक्षों में आशा निराशा, अभिलाषा, ~~अ~~ दीनता पश्चाताप आत्मदोष दर्शन, विवशता उन्माद, जड़ता व्याधि आदि विरह की मानदशाओं का चित्रण है।

हे प्रियतम! तुम परदेश मत जाओ यदि तुम जाओगे तो मेरी सारी आशाएँ तुम अपने साथ लेते जाओगे। फिर मैं किस प्रकार जी पाऊँगी। हे मेरे प्रियतम! पति के साथ रहने से नारी कितनी भी दुखी हो सौभाग्यवती होती है जैसे चन्द्रमा के निकट तारे शोभा पाते हैं।

— "आषाढ़, तोहि अनुराग बिदेसा।

हमरे रंग रमत मन जाए बहु लोभ बहु कौन संदेस

बनहि गमन करि होपति दोसर मीत लिहसि जाय पाती मोरा

हीरा मानिक मानिक एक नहि मोतिन केरि मोगर बहु तोरा

गवन गमन करि नयन नीर भरि, के रिझाओं न मोरा पिउ मोरा

पिउ हि नगर बसि पिउ मोर परदेस, कइसे पूरत मन मोरा

पिउ संग का मिनि बहुत सोहागिनि, चंद निकट जइसे तारा।"

इतना अनुनय विनय के उपरान्त भी प्रियतम रुकते नहीं चले ही गए लोकिन है कि प्रिय चुपचाप रात को सोता छोड़कर चले गए। सूनी सेज सूना घर... [illegible] खाने को दौड़ते हैं —

[illegible] प्रकृति [illegible] अति सुंदर है, [illegible] का [illegible] करुण [illegible] है। [illegible]

[illegible]

[illegible] भाव भूमि पर विचरण करते रहते हैं। [illegible] भाव भूमि पर [illegible]

[illegible] विरहावस्था [illegible] के रूप में [illegible] होती है। [illegible] हृदय का ठिकाना नहीं है। [illegible] (अवस्थाएँ) [illegible] (एकादशी) [illegible] नाम ही नहीं [illegible] प्रिय मिलन की अत्यंत आकुलता होती है। [illegible] अभिलाषा होती है कि [illegible] वही प्रिय के [illegible]

"सूरपति बाँधे लोचन मों
[illegible] पारस ॥
नन्दनन्दन ने केवल आवन्त्रो
मन मनोरथ [illegible]"

जायसी ने रानी नागमती का [illegible]
"यह तन जारौं छार कै
कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परौं
कंत धरैं जहँ पाँव" ॥
यद्यपि विप्रलंभ है
विरह वर्णन में सूरदास नन्ददास

नन्ददास आदि कवियों जैसी व्यापकता एवं भावों वैज्ञानिक गहराई नहीं है। विद्यापति ने लोक गीतों के लालित्य व साँचे में ढाला। संस्कृत में लोक गीत की शैली में पूर्व जयदेव ने 'गीत गोविन्द' में आरम्भ की थी जयदेव की शिष्यता की ही विभूति थे। विद्यापति ने एक और विरह की [struck through] अभिव्यञ्जना उपलब्ध नहीं है जैसा सूरदास में। सूरदास में अलौकिकता का तत्व अधिक है। विद्यापति शृंगार एवं भौतिकता का।

सूरदास के कृष्ण ने गोपियों का ही विरह दर्शाया है। विद्यापति ने कृष्ण के विरह का भी वर्णन किया है राधा ने प्रायः कृष्ण विरह पक्षों में विरहिणी राधा की आभा बढ़ाई है कि उनके प्रियतम श्री कृष्ण मथुरा गए दौड़ें से काम लो। ऐसा करने से नायिका का तत्व-अनुभावों और भावों के समान हृदय का प्रत्यक्षीकरण होता है। अनुभाव का अनुभावित भावों के साथ भी तरह आ जाता है।

विद्यापति उच्च कोटि के कलाकार, संगीतज्ञ, रसिक एवं कवि हैं। विद्यापति के गीतों की सबसे बड़ी विशेषता है संगीतात्मकता। विद्यापति के गीतों में लोकगीत की धुन, उनकी सहजता एवं गंभीर अनुभूतियों की व्यंजना सुन्दर है।।

[illegible]